International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 188-189

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 188-189
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 06-07-2020
Accepted: 09-08-2020

डॉ. अमरदीप कुमार चौधरी
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत विभाग, एस० एस० भी०, महाविद्यालय, कहलगॉव, ति० माँ. भागलपुर, वि. वि. भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अमरदीप कुमार चौधरी
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत विभाग, एस० एस० भी०, महाविद्यालय, कहलगॉव, ति० माँ. भागलपुर, वि. वि. भागलपुर, बिहार, भारत

भास की प्राचीनता एवं प्रामाणिकता

डॉ. अमरदीप कुमार चौधरी

प्रस्तावना

संस्कृत के नाटककारों में रूपककार भास का नाम अग्रगण्य है। परवर्ती साहित्यकारों ने भास का स्मरण आदर के साथ किया है। कतिपय लक्षणग्रन्थों के लिये भास के रूपक ही लक्ष्य रहे हैं। इससे रूपककार की प्राचीनता सिद्ध होती है। भास के रूपक अत्यन्त प्राचीन एवं प्रामाणिक है। इसके समर्थन के बिन्दु हैं –

- चाणक्य ने इसके एक श्लोक को यथावत् उद्धत किया है। चाणक्य के अर्थशास्त्र में सैनिकों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करने के प्रसङग में निम्न दो श्लोक मिलते हैं –

  यान् यज्ञ संधैस्तपसा च विप्राः स्वगैषिणः पात्रचयैश्च यान्ति।
  क्षणेय तामत्यतियान्ति शूराः प्राणान् सुयुद्धेषु परित्यजन्तः [1]।।
  नवं शरावं सलिलैः सुपूर्णं सुसंस्कृतं दर्भकृतात्तरीयम्।
  ततस्य माभून्नरकं च गच्छेद यो भर्तृपिण्डस्य कृतेन युद्धयते [2]।।

प्रसंग के आधार पर ये दोनों श्लोक अन्य ग्रन्थों से लिये गये प्रतीत होते हैं जिनमें द्वितीय श्लोक भास के प्रतिज्ञायौगन्धरायण (4.2) में मिलता है।

- शूद्रक (तृतीय सदी) ने भास के चारूदत्त को ही विस्तृतरूप देकर मृच्छकटिकम् की रचना की ।
- कालिदास ने इसके नाम का सादर उल्लेख किया है। महाकवि कालिदास ने अपने मालविकाग्निमित्र नामक नाटक को प्रस्तावना में निम्न पंक्तियों द्वारा भास का सादर स्मरण किया है –

  प्रथितयशसां भाससौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धानति क्रम्य
  वतमान कवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदों बहुमानः .. [3]।

इससे यह स्पष्ट है कि भास कालिदास से प्राचीन तथा प्रथितयशस थे।

- भास (6ठी सदी) ने काव्यालंकार में प्रतिज्ञायौगन्धरायण की एक प्राकृत पङिक ''अणेण मम मादाहदों, अणेन मम विदा अणेन मम सुदो'' का उल्लेख कर आलोचना की है।
- गद्यकवि दण्डी (षष्ठ सदी) ने अवन्तिसुन्दरी नामक गद्यकाव्य में भास नाटकों के सन्धियों, लक्षणों तथा वृत्तियों के प्रयोग की चर्चा की है।

  सुविभक्तामुखाद्यंगो व्यक्तलक्षणवृत्तिभिः।
  परेतोऽपिस्थितो भासः शरीरैरिवे नाटकैः।।

तथा स्वप्नवासवदत्तम् एवं चारूदत्त के ''लिम्पतीवतमोऽंगानि'' का उद्धरण दिया है।

- गद्यकवि बाणभट्ट (सातवीं सदी) ने भास नाटक की तीन विशेषताओं सूत्रधार से आरम्भ, बहुभूमिका तथा पताकान्वित को माना है –

  सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैः बहुभूमिकैः
  सपताकैर्यशो लेभे भासो देवकुलैरिवा।।

वामन (8वीं सदी) ने काव्यालंकार वृत्ति में भास का तीन उद्धरण दिया है–

1. शरच्छशांकगौरेण वाताविद्धेन भामिनि।
   काशपुष्पलवेनेदं साश्रुपातं मुखं मम [4]।।
2. भर्तृपिण्डस्य यो कृते न युद्ध्येत्[5]।
3. यासां बलिर्भवति मद्गृहदेहलीनाम्[6] ।

- गउडबहो नामक प्राकृतमहाकाव्य के लेखक वाक्यपतिराज(800ई०) ने भास को ज्वलनमित्र (अग्निमित्र) कहा है। वासवदत्ता के विषय में आग में जलकर मर जाने की असत्य सूचना देने के कारण यह नाम पड़ा

  भासम्मि जलनमित्ते कन्तीदेवे तहाविरहुआरे।
  सोबन्धवे अबन्धम्मि हरि अन्दे अ आणन्दो [7]।।

- राजशेखर (नवमसदी) ने भास के स्वप्नवासवदत्तम् को उनका सर्वश्रेष्ठ नाटक स्वीकार किया है –

  भासनाटकचक्रेऽस्मिन् छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।
  स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः [8]।।

- भरतनाट्यवेदविवृति ''अभिनवभारती'' में अभिनवगुप्त (दशवीं सदी) ने स्वप्नवासवदत्तम् का निर्देश किया है –''क्वचित् क्रीडा यथा स्वप्नवासवदत्तायाम् [9]। यह क्रीडा का परामर्श करता है।
- शृंगार प्रकाश में भोजदेव (11वीं सदी) ने वासवदत्ता का उल्लेख किया है –
  स्वप्नवासवदत्ते पद्मावतीं द्रष्टुं राजा सममुद्रगृहके गतः।
  पद्मावती विरहितं तदवलोक्य या एकाशयने सुष्वाप।
  वासवदत्ता च स्वप्नवद, स्वप्नं ददर्श, स्वप्नायमानाञ्च वासवदत्तामाबभाषे।
  स्वप्नशब्देन नेह स्वापो वा, स्वप्नदर्शनं वा, स्वप्नायितं वापिनन्दितम् [10]।
  यह नाटंक के पञ्चम अंक की घटना का संक्षेप है।
- जयानक के ''पृथ्वीराजविजय'' की एक टीका में व्यास और भास की प्रतिस्पर्द्धा का उल्लेखकर व्यास को पराजित बताया गया है।
- नाट्यदर्पण में राम चन्द्रगुणचन्द्र (12वीं सदी) ने स्वप्नवासदत्त सहित भास का उल्लेख किया है – यथा भासकृते स्वप्नवासवदत्ते शेफालिका शिलातलमवलोक्य वत्सराजः –

  पादाक्रान्तानि पुष्पाणि सोष्मचेदं शिलातलम्।
  नूनं काचिदिहासीना मां दृष्टवा सहसागता [11]।

- सर्वानन्द ने अमरकोशटीका सर्वस्व में पद्मावती तथा उदयन के विवाह को अर्थशृंगार का उदाहरण माना है।
- भावप्रकाशन में शारदातनय (12वीं सदी) ने कहा है – स्वप्नवासवदत्ताख्यमुदाहरणमत्र तु.....अत्तोदाहरणम्,

  चिरप्रसुप्तः कामो मे वीणया प्रतिबोधितः।
  तां तु देवीं न पश्यामि यस्याः घोषवती प्रिया [12]।।

संदर्भ ग्रंथ –

1. अर्थ पृ० – 792
2. प्रतिज्ञा० – 4.2
3. मालविकाप्रस्ता पृ० – 6
4. स्वप्न० – 4.7/8
5. प्रतिज्ञा० – 4.2
6. चारूदत्त् – 1.10
7. गडड – 1.7
8. का०मी० – 17.10
9. अभिमारक – 1.108
10. शृंगार – 43
11. नाट्यदर्पण – 3.4
12. भाव० – 2.6